रसूलुल्लाहﷺ का हुलया मुबारक

मौलाना ज़ुल्फिकार अहमद नक्शबंदी (दब)

ये PDF ग्रामर या कोई भाषा का अदब नहीं है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रसूलुल्लाहﷺ के हुलया मुबारक के बारे में किताबो में बहुत सी तफसीले आयी है.

इब्ने मुस्लिमा (रह) एक ताबई है, वह एक सहाबी के पास बैठे है. उनसे पूछते है की आप रसूलुल्लाहﷺ के बारे में कुछ हमे बताइए तो उन्होंने बडी मुहब्बत से आपका हुलया बयां फरमाया की आप का माथा मुबारक बडा दिलफरेब था, आपका चेहरा मुबारक इतना कुशादा था जिस पर सुर्खी और सफेदी थी, आपकी भवे मुबारक देखने के काबिल थी, आपका सीना मुबारक बडा कुशादा था, दोनो मोंढो के बीच मुहरे नबुव्वत थी, दोनो हथेलियां पुरगोश्त थी, आपका जिस्म मुबारक इतना नरम था की हज़रत अनस (रदी) फरमाया करते थे की मैंने अपनी ज़िन्दगी में रेशम को भी छुआ और अपने महबूब के पाक जिस्म को भी तो में इस नतीजे पर पहुंचा की मेरे महबूब का जिस्म मुबारक रेशम से भी ज्यादा नरम था. तो वह फरमाते है की जब रसूलुल्लाहﷺ उठते तो यूं महसूस होता की जैसे चट्टान के पीछे से आर

निकल आए हो. जब आप चलते तो यूं महसूस होता जैसे ऊंचाई से नीचे की तरफ आ रहे हो.

रसूलुल्लाहﷺ इर्शाद फरमाया करते थे की मेरे भाई यूसुफ (अलै) तो 'सबीह' थे और में 'मलीह' हूं. सवाहत चेहरे पर अगर सफेदी गालिब हो तो उस्को कहते है और मलाहत उस्को कहते है की जब सूरत को देखा जाए तो नक्श ऐसे हो की देखते ही दिल पर असर करे. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की में मलीह हूं. और आपके हुस्न व जमाल की क्या बाते करनी है.

| लुआबे रसूलुल्लाह ﷺ

आपﷺ के लुआबे मुबारक में इतना असर था की खैबर के दिन हज़रत अली (रदी) की आंखें दुख रही थी, आपने अपना लुआब मुबारक उन्की आंखों पर लगाया, आंखें ठीक हो गई.

उत्बा बिन खरकद (रदी) जो मूसल के फातेह कहे जाते है, उन्के जिस्म पर दाने निकल आए. रसूलुल्लाहﷺ ने लुआबे मुबारक लगा दिया. दोनो को भी शिफा हो गई और पूरी ज़िन्दगी उन्के जिस्म से ऐसी खुश्बू आती रही की दूसरे सहाबा किराम उन्के जिस्म से खुश्बू सूंघा करते थे.

| रसूलुल्लाह ﷺ का पसीना मुबारक

आपके पसीने मुबारक में इतनी खुश्बू थी की जब

कभी सहाबा किराम आपको तलाश करने के लिए निकलते तो फरमाते है की हम रास्ते की खुश्बू सूंघ कर अंदाज़ा लगा लेते थे की रसूलुल्लाहﷺ इस रास्ते से गुजरे होगे. एक सहाबिया अपने बच्चे को एक शीशी देकर भेजती की दोपहर के वक्त जब आप आराम करे तो यह आपके बदन मुबारक पर जो पसीना आए उस्के कतरो को इकठ्ठा करके उस शीशी में डाल ले. वह फरमाती है की में जिस अत्तर में यह पसीना शामिल कर देती उस्की खुश्बू में इजाफा हो जाया करता था.

एक गरीब सहाबी आपकी खिदमत में हाज़िर हुए और अपनी बेटी की शादी के लिए दुआ करवाई. रसूलुल्लाहﷺ ने दुआ फरमा दी और उस्को कहा की आपके पास दुल्हन के लिए खुश्बू तो नहीं होगी. चुनांचे आपने अपने पसीने मुबारक की कुछ बूंदे अता फरमा दी. वह लेकर गए तो सब घरवालो ने उसे इस्तेमाल किया. उन सब घरवालो से इतनी खुश्बू आती थी की इस घरवालो का नाम 'खुश्बू वालो का घर' मशहूर हो गया.

| रसूलुल्लाह ﷺ का छूना

उबादा बिन सामत (रदी) जो एक बडे दर्जे के बदरी सहाबी है, फरमाते है की एक दिन में हज़रत अनस

(रदी) के यहां एक दावत पर हाज़िर हुआ. एक बांदी मेरे लिए एक तौलिया लाई. तौलिया काफी मैला था. हज़रत अनस ने कहा इस्को साफ करके ले आओ. यह बांदी भागी गई और जलते हुए तन्दूर में उस तौलिये को डाला और उठाकर वापस ले आयी. मैंने देखा की वह तौलिया बिल्कुल साफ सुथरा मेरे सामने था. मुझे हैरानी हुई. मैंने हज़रत अनस (रदी) से पूछा की इस्मे क्या राज़ हैं? उन्होंने बताया की एक बार रसूलुल्लाहﷺ मेरे यहां तशरीफ लाए थे. मैंने आपके हाथ मुबारक धुलवाए और आपके हाथों को पोंछने के लिए यह तौलिया पेश किया, जिस्से आपने अपने हाथ मुबारक खुश्क किए. उस दिन से इस तौलिए को आग ने जलाना छोड दिया. जब यह मैला हो जाता है तो हम इसे आग में डालते है, आग इस्के मैल को खा लेती है. साफ तौलिया हम आग से बाहर निकाल लेते है.

सैय्यदा फातिमा (रदी) ने रोटियां लगायी रसूलुल्लाहﷺ ने भी एक दो बना कर दी. काफी देर के बाद सब पक गई तो हैरान हुई की इस्मे से एक दो पक ही नहीं रही. इस तरह आटे का आटा मौजूद है. रसूलुल्लाहﷺ ने पूछा बेटी क्या हुआ? अर्ज़ किया, रसूलुल्लाहﷺ दो तीन रोटियां ऐसी है जो पक नहीं

रही. फरमाया, यह वही रोटियां होगी जिन पर तेरे वालिद के हाथ लग गए. अब आग इस आटे पर असर नहीं कर सकती. तो रसूलुल्लाह ﷺ जिस चीज़ को छू लेते थे उस पर यूं असरात हो जाते थे.

लोग खजूरो के पेड लगाते थे. कई-कई सालो के बाद फल आया करता था लेकिन जब रसूलुल्लाह ﷺ ने पेड लगाए तो उसी साल खजूर ने फल उठा लिया. आपके छूने के इस तरह असरात होते थे.

एक सहाबी हज़रत जैद बिन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ग़जवा ज़ातुल अज़का के अन्दर जा रहे थे. रसूलुल्लाह ﷺ ने देखा की उन्का ऊंट बहुत सुस्त रफ्तारी से चल रहा है. रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी छडी उस ऊंट को लगाई. छडी लगते ही ऊंट इतना सरपट दौडने लगा की दूसरी सवारियो से आगे निकल जाया करता था.

| रसूलुल्लाह ﷺ का बाल मुबारक

उम्मे अम्मारा (रदी) एक सहाबिया है. सुलह हुदैबिया के मौके पर जब रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने बाल मुबारक बाटे तो उम्मे अम्मारा को भी अता हुए. वह उन्को पानी में डालकर निकालती और वह पानी बीमारो को पिलाती थी तो अल्लाह तआला उन्को शिफा अता फरमा देते थे.

हज़रत खालिद बिन वलीद (रदी) ने अपनी टोपी में कुछ बाल मुबारक लगा रखे थे और फरमाते थे की में जिस तरफ यह टोपी पहनकर जाता था अल्लाह तआला मुझे हर मुकाम पर फतेह अता कर दिया करते थे, सुब्हानअल्लाह.

खुतबात जुल्फकार फकीर हिन्दी/2 [१२८-१३१] मजमून का खुलासा हे.